श्री कामेश्वर सिंह 'सहायक प्रोफेसर'
राजनीति विभाग, संत हरिदास महिला कॉलेज वाराणसी
वर्ग - बी०ए० पार्ट — I 'प्रतिष्ठा'
पत्र - प्रथम 'यूनिट न० — 01
राजनीतिक-शास्त्र', डा० वीरकेश्वर प्रसाद सिंह
दिनांक — 08-07-2020,

राजनीति शास्त्र के क्षेत्र के अंग भाग :—

(3) सरकार के सम्बन्ध में :— हम जानते हैं कि राज्य और सरकार में अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है। एक की अनुपस्थिति में हम दूसरे की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। राज्य अमूर्त संस्था है तो सरकार उसका मूर्त रूप। अतः इसमें सरकार का भी अध्ययन किया जाता है। राजनीतिक शास्त्र सरकार के संगठन इसके प्रकार तथा इसके कार्य का ज्ञान हमें इसी शास्त्र से होता है। इसमें सरकार के सभी पहलुओं पर प्रकाश डाला जाता है।

(4) राजनीतिक संस्थाओं के प्रसंग में :— क्योंकि राज्य आज केवल नैतिक संस्था ही नहीं है और इसका सम्बन्ध सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक संगठनों से भी है। इसलिए राजनीतिक शास्त्र राज्य और सरकार के अध्ययन के साथ-साथ विभिन्न राजनीतिक दलों, दबाव गुटों, संगठनों संघों, राजनीतिक समूहों आदि का भी अध्ययन करता है। राजनीतिक दलों का अध्ययन तो सारे विश्व का राजनीति शास्त्र का विषय बन गया है।

(5) अन्तरराष्ट्रीय संगठनों का प्रबंध में :— इन
(6) सब के पढ़ने से है कि आज का युग अन्तरराष्ट्रीयवाद का युग बन गया है। एक राज्य दूसरे राज्य के सम्बन्ध स्थापित करते हैं। राजनीति शास्त्र अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, अन्तर्राष्ट्रीय कानून आदि विषयों का भी अध्ययन करता है। इस संयुक्त राष्ट्र संघ जैसे अन्तरराष्ट्रीय संगठन के बारे में भी पूरी ज्ञान प्राप्त करता है।

(6) विभिन्न विषयों के सम्बन्ध में :— उपर्युक्त विषयों के अलावा राजनीतिशास्त्र अन्य महत्वपूर्ण विषयों का भी अध्ययन करके सैद्धान्तिक करता है। इसके अन्तर्गत अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं, गरीबी, युद्ध विभिन्न देशों की स्थानीय संस्थाओं और उनकी समस्याओं की विवेचना होती है।

स्पष्ट है कि राजनीतिशास्त्र का क्षेत्र बहुत व्यापक हो गया है। इसके क्षेत्र का सीमा में बांधकर नहीं रखा जा सकता। समय के विकास के साथ इसका क्षेत्र विस्तृत होता जा रहा है। आधुनिक—

Scanned with CamScanner

⑦ युग में भी इसका क्षेत्र और व्यापक होता गया है। राजनीतिशास्त्र में व्यवहारवादी आन्दोलन के साथ इसके क्षेत्र का व्यापक होना स्वाभाविक है। आधुनिक युग में राजनीतिशास्त्र मानव के विभिन्न व्यवहारों और क्रिया कलापों तथा उसके राजनीतिक जीवन को प्रभावित करने वाली सभी इकाइयों का अध्ययन करने लगा है।

निष्कर्ष :→ उपर्युक्त विवरणों से यह स्पष्ट होता है कि राजनीतिशास्त्र का स्वरूप व्यापक और अनुशासनिक विषय है। यह मानव जीवन के राजनीतिक पहलू का सम्पूर्ण अध्ययन करता है। राजनीतिक पक्ष का क्षेत्र अभी व्यापक है। प्राचीन राज्य के स्वरूप आज के लोक कल्याणकारी राज्यों तक विस्तृत है। राज्य का क्षेत्र अन्तर्राष्ट्रीयता वैश्वीकरण के दौर में भी राष्ट्रों की तरह सीमित नहीं रह गया है। विस्तृत अब तो विश्व के सम्पूर्ण मानव-समाज के हितों की तरह कार्य करता है।

Scanned with CamScanner